१०. विभूतियोग

श्रीभगवान बोले— हे अर्जुन, मेरे परम वचन को तुम फिर सुनो, जिसे मैं तुम जैसे अतिशय प्रेम रखने वाले के हित के लिए कहूंगा. (१०.०१)

मेरी उत्पत्ति को देवता, महर्षि आदि कोई भी नहीं जानते हैं; क्योंकि मैं सभी देवताओं और महर्षियों का भी आदिकारण हूं. (१०.०२)

जो मुझे अजन्मा, अनादि और समस्त लोकों के महान् ईश्वर के रूप में जानता है, वह मनुष्यों में ज्ञानी है और सब पापों से मुक्त हो जाता है. (१०.०३)

बुद्धि, ज्ञान, भ्रम का अभाव, क्षमा, सत्य, इन्द्रिय संयम, मन संयम, सुख, दुःख, उत्पत्ति, प्रलय, भय, अभय, अहिंसा, समता, संतोष, तप, दान, यश, अपयश आदि प्राणियों के अनेक प्रकार के भाव मुझसे ही प्रकट होते हैं. (१०.०४-०५)

सात महर्षि, उनसे पहले चार सनकादि तथा चौदह मनु ये सब मेरे संकल्प से उत्पन्न हुए हैं, जिनकी संसार में ये सारी प्रजा हैं. (१०.०६)

जो मनुष्य मेरी इस विभूति और योगमाया को तत्त्व से जानता है, वह अविचल भक्तियोग से युक्त हो जाता है, इसमें कुछ भी संशय नहीं है. (१०.०७)

मैं ही सबकी उत्पत्ति का कारण हूं और मुझ से ही जगत का विकास होता है. ऐसा जानकर बुद्धिमान् भक्तजन श्रद्धापूर्वक मुझ परमेश्वर को ही निरन्तर भजते हैं. (१०.०८)

मुझ में ही चित्त को स्थिर रखने वाले और मेरी शरण में आने वाले भक्तजन आपस में मेरे गुण, प्रभाव आदि का कथन करते हुए निरन्तर संतुष्ट रहकर रमते हैं. (१०.०९)

निरन्तर मेरे ध्यान में लगे प्रेमपूर्वक मेरा भजन करने वाले भक्तों को मैं ब्रह्मज्ञान और विवेक देता हूं, जिससे वे मुझे प्राप्त करते हैं. (१०.१०)

उनपर कृपा करके उनके अन्तःकरण में रहने वाला, मैं, उनके अज्ञानजनित अन्धकार को तत्त्वज्ञानरूपी दीपक द्वारा नष्ट कर देता हूं. (१०.११)

अर्जुन बोले— आप परमब्रह्म, परमधाम और परमपवित्र हैं; आप शाश्वत दिव्य पुरुष आदिदेव, अजन्मा और सर्वव्यापी हैं; ऐसा देवर्षि नारद, असित, देवल, व्यास आदि समस्त ऋषिजन तथा स्वयं आप भी मुझसे कहते हैं. (१०.१२-१३)

हे केशव, मुझसे आप जो कुछ कह रहे हैं इन सबको मैं सत्य मानता हूं. हे भगवन्, आपके वास्तविक स्वरूप को न देवता जानते हैं और न दानव. (४.०६ भी देखें) (१०.१४)

हे प्राणियों को उत्पन्न करने वाले, हे भूतेश, हे देवों के देव, जगत के स्वामी, पुरुषोत्तम, केवल आप स्वयं ही अपने आपको जानते हैं. (१०.१५)

अतः अपनी उन दिव्य विभूतियों को — जिनसे आप इन सम्पूर्ण लोकों में व्याप्त होकर स्थित रहते हैं — पूर्णरूपसे वर्णन करने में केवल आप ही समर्थ हैं. (१०.१६)

हे योगेश्वर, मैं आपको निरन्तर चिन्तन करता हुआ कैसे जानूं और हे भगवन्, किन-किन भावों द्वारा मैं आपका चिन्तन करूं? (१०.१७)

हे जनार्दन, आप अपनी योगशक्ति एवं विभूतियों को विस्तारपूर्वक फिर से कहिए, क्योंकि आपके अमृतमय वचनों को सुनते हुए मुझे तृप्ति नहीं हो रही है. (१०.१८)

श्रीभगवान बोले— हे कुरुश्रेष्ठ, अब मैं अपनी प्रमुख दिव्य विभूतियों को तेरे लिए संक्षेप में कहूंगा, क्योंकि मेरे विस्तार का तो अन्त ही नहीं है. (१०.१९)

हे अर्जुन, मैं समस्त प्राणियों के अन्तःकरण में स्थित आत्मा हूं तथा सम्पूर्ण भूतों के आदि, मध्य और अन्त भी मैं ही हूं. (१०.२०)

मैं अदिति के (बारह) पुत्रों में विष्णु और ज्योतियों में प्रकाशमान् सूर्य हूं, वायु देवताओं में मरीचि और नक्षत्रों में चन्द्रमा हूं. (१०.२१)

मैं वेदों में सामवेद हूं, देवों में इन्द्र हूं, इन्द्रियों में मन हूं और प्राणियों की चेतना हूं. (१०.२२)

मैं रुद्रों में शंकर हूं और यक्ष तथा राक्षसों में धनपति कुबेर हूं, वसुओं में अग्नि और पर्वतों में सुमेरु पर्वत हूं. (१०.२३)

हे पार्थ, मुझे पुरोहितों में उनका मुखिया बृहस्पति जानो. मैं सेनापतियों में स्कन्द और जलाशयों में समुद्र हूं. (१०.२४)

मैं महर्षियों में भृगु और शब्दों में ओंकार हूं. मैं यज्ञों में जपयज्ञ और स्थिर रहने वालों में हिमालय पर्वत हूं. (१०.२५)

मैं समस्त वृक्षों में पीपल का वृक्ष, देवर्षियों में नारद, गन्धर्वों में चित्ररथ और सिद्धों में कपिल मुनि हूं. (१०.२६)

मैं अश्वों में अमृत के साथ समुद्र से प्रकट हुए उच्चैःश्रवा नामक घोड़ा, हाथियों में ऐरावत और मनुष्यों में राजा, शस्त्रों में वज्र, गायों में कामधेनु, संतान की उत्पत्ति के लिए कामदेव और सर्पों में वासुकि हूं. (१०.२७-२८)

मैं नागों में शेषनाग, जल देवताओं में वरुण, पितरों में अर्यमा और शासकों में यमराज; दिति के वंशजों में प्रह्लाद, गणना करने वालों में समय, पशुओं में सिंह और पक्षियों में गरुड़ हूं. (१०.२९-३०)

मैं पवित्र करने वालों में वायु हूं और शस्त्रधारियों में राम हूं, जलचरों में मगर और नदियों में पवित्र गंगा नदी हूं. (१०.३१)

हे अर्जुन, सारी सृष्टि का आदि, मध्य और अन्त भी मुझसे ही होता है. मैं विद्याओं में तारतम्य विद्या और विवाद करने वालों का तर्क हूं. (१०.३२)

मैं अक्षरों में अकार और समासों में द्वन्द्व समास हूं. अक्षयकाल अर्थात् अकाल पुरुष तथा विराट्स्वरूप से सबका पालन-पोषण करने वाला भी मैं ही हूं. (१०.३३)

मैं सबका नाश करने वाली मृत्यु और भविष्य में होने वालों की उत्पत्ति का कारण हूं. संसार की सात श्रेष्ठ देवियां, जो कीर्ति, श्री, वाणी, स्मृति, मेधा, धृति और क्षमा के अधिष्ठात्रियां हैं, वे भी मैं ही हूं. (१०.३४)

मैं सामवेद के गाये जाने वाले मंत्रों में बृहत्साम, वैदिक छन्दों में गायत्री छन्द, महीनों में मार्गशीर्ष और ऋतुओं में वसन्त ऋतु हूं. (१०.३५)

मैं छलियों में जुआ, तेजस्वियों का तेज, तथा विजय, निश्चय और सात्त्विक मनुष्यों का सात्त्विक भाव हूं. (१०.३६)

मैं वृष्णि वंशियों में कृष्ण, पाण्डवों में अर्जुन, मुनियों में व्यास और कवियों में शुक्राचार्य हूं. (१०.३७)

मैं दमन करने वालों में दण्डनीति और विजय चाहने वालों में नीति हूं. मैं गोपनीय भावों में मौन और ज्ञानियों का तत्त्वज्ञान हूं. (१०.३८)

हे अर्जुन, समस्त प्राणियों की उत्पत्ति का बीज मैं ही हूं, क्योंकि चर और अचर किसी का अस्तित्व मेरे बिना नहीं है (अर्थात् सब कुछ मेरा ही स्वरूप है). (७.१०, ९.१८ भी देखें) (१०.३९)

हे अर्जुन, मेरी दिव्य विभूतियों का तो अन्त ही नहीं है. मैंने तुम्हें अपनी विभूतियों के विस्तार का वर्णन संक्षेप में कहा है. (१०.४०)

जो भी विभूतियुक्त, कान्तियुक्त और शक्तियुक्त वस्तु है, उसे तुम मेरे तेज के एक अंश से ही उत्पन्न हुई समझो. (१०.४१)

हे अर्जुन, तुम्हें बहुत जानने की क्या आवश्यकता है? मैं अपने तेज अर्थात् योगमाया के एक अंशमात्र से ही सम्पूर्ण जगत को धारण करके स्थित रहता हूं. (छा.उ. ३.१२.०६ भी देखें) (१०.४२)

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुनसंवादे विभूतियोगो नाम दशमोऽध्यायः ॥